रघुवीर सहाय

संतान

एक असंभव इच्छा है
मैं अपनी संतान से अधिक उम्र तक जी लूँ
पर यह क्या कोई प्रतिस्पर्द्धा है
या मेरा वात्सल्य ।

एक समय था
Delhi, Rajkamal Prakashan, 1995: 103